# लोमड़ी और जमीन

बच्चों द्वारा लिखी कहानियों का संकलन

एकलव्य का प्रकाशन

हेमलता विश्वकर्मा, सातवीं, शोभापुर, पिपरिया, चकमक जनवरी, 87 में प्रकाशित।

# लोमड़ी और जमीन

चकमक (जुलाई, 85 से दिसम्बर, 88) में प्रकाशित, बच्चों द्वारा
लिखी गई कहानियों का संकलन

एकलव्य का प्रकाशन

# लोमड़ी और जमीन

## Lomdi Aur Jamen

चकमक में प्रकाशित बच्चों द्वारा लिखी कहानियों का संकलन

© एकलव्य

प्रथम संस्करण: जून 1989/3000 प्रतियाँ
परिवर्द्धित संस्करण: जनवरी 1996/3000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रण: मार्च 1998/3000 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रण: अक्टूबर 2002/3000 प्रतियाँ
तीसरा पुनर्मुद्रण: अगस्त 2005/3000 प्रतियाँ
चौथा पुनर्मुद्रण: मई 2006/3000 प्रतियाँ
पाँचवाँ पुनर्मुद्रण: सितम्बर 2006/3000 प्रतियाँ
छठवाँ पुनर्मुद्रण: अगस्त 2008/3000 प्रतियाँ
70 gsm मेपलिथो व 170 gsm आर्ट कार्ड (कवर) पर प्रकाशित

ISBN: 81-87171-07-3
मूल्य: 20.00 रुपए

प्रकाशक: एकलव्य
ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.)
फोन: 0755 - 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in
सम्पादकीय: books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिए: pitara@eklavya.in

---

आवरण: वैभव बंसल, चौथी, खरगौन, म.प्र.। चकमक, मई, 87 में प्रकाशित।
पिछला आवरण: जुल्फकार मंसूरी, छठवीं, खापरखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.।

मुद्रक : राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोन 0755-268 7589

# बड़ों की एक बात

यह बात तो अब तक खूब दोहराई गई है कि देश में, खासकर हिन्दी क्षेत्र में बाल साहित्य की दशा बहुत खराब है। सवाल है इस स्थिति में बदलाव कैसे लाया जाए? एक तरफ टेलीविज़न व कॉमिक्स ने बाज़ार गर्म कर रखा है। दूसरी ओर विदेश के निम्नस्तरीय खिलौनों, किताबों व रचनाओं की नकलें भरी पड़ी हैं। इसका यह मतलब कतई नहीं है कि विदेशों में बच्चों के लिए केवल निम्नस्तरीय साहित्य व चीज़ें ही रची जाती हैं। वास्तव में वहाँ बहुत कुछ ऐसा भी है जिसे सही ढंग से अपने यहाँ इस्तेमाल किया जा सकता है। लेकिन देखने में यही आता है कि बार्बी गुड़िया, हीमैन, सुपरमेन व बैटमेन जैसी चीज़ों की नकल ही व्यापक रूप से होती है।

ज़रूरत इस बात की है कि बच्चे को अच्छा साहित्य तथा खेल सामग्री मिले। एकलव्य पिछले कई सालों से इस कमी को पूरा करने की कोशिश कर रहा है। खिलौनों तथा बालोपयोगी साहित्य के माध्यम से हम बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को मौका देने का प्रयास कर रहे हैं। चकमक मासिक पत्रिका के माध्यम से भी एकलव्य बच्चों में रचनात्मकता विकसित करने के लिए प्रयासरत है।

आमतौर पर तो बड़े ही बच्चों के लिए लिखते हैं लेकिन चकमक, बालचिरैया और बाल कलम में प्रकाशित होने वाली बच्चों की रचनाएँ हर मायने में उनसे इक्कीस ही हैं। इन्हीं रचनाओं से हमने पिछले कुछ सालों से संकलन तैयार करना शुरू किया है। मुख्यतः कविताओं और कहानियों के संकलन अभी तक हमने प्रकाशित किए हैं। आमतौर पर इन संकलनों में चित्र भी बच्चों के बनाए हुए ही हैं। हम मानते हैं कि देश के हर बच्चे की अपनी एक विशिष्ट अभिव्यक्ति है, शैली है- चाहे वह गाँव में रहता हो या फिर कस्बे या शहर में। अगर मौका दिया जाए तो यह स्वाभाविक रूप से अपनी भाषा या तरीके से उभर आएगी। उदाहरण के लिए इस संकलन की बस्तर के फूलसिंह ठाकुर की कहानी "लोमड़ी

और जमीन" ही लें। जिस प्रकार की कल्पनाशक्ति इस कहानी से उभरती है उसमें गैब्रियल गारसिया मार्क्वेज़ (नोबल पुरस्कार प्राप्त लातिन अमरीकी उपन्यासकार) की झलक मिलती है। लेकिन फूलसिंह जैसे लोगों की यह सृजनात्मकता व्यापक रूप से क्यों नहीं देखने में आती? स्कूली भाषा, भय, बड़ों की डाँट-डपट व गलत-सही का सिलसिला ज़ब तक हावी रहेगा, यह नन्ही अभिव्यक्ति मरती रहेगी और इसकी जगह लेगी एक विकृत संस्कृति जो न उस बच्चे की है, न उस परिवेश की। और इसमें से उभरेगा एक नीरस व उजड्ड व्यस्क जिसको हम अन्ततः मिसगाइडेड यूथ या भटके हुए युवा का नाम देकर धिक्कारते हैं।

इन संकलनों की सभी रचनाएँ चकमक में जुलाई, 1985 से दिसंबर 1988 के बीच समय-समय पर प्रकाशित हुई हैं। इनमें से कई रचनाएँ किशोर भारती के भगतसिंह पुस्तकालय व सांस्कृतिक केन्द्र की बाल सभा व अन्य गतिविधियों में तैयार की गईं और फिर चकमक में छापी गईं। रचनाकार के नाम के साथ उनकी उम्र या कक्षा का उल्लेख है। यह उम्र या कक्षा रचना लिखते समय या चित्र बनाते समय की है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति की एक देन नकल है। और यह केवल परीक्षा या स्कूल तक ही सीमित नहीं रहती, बल्कि स्कूल के बाहर की ज़िन्दगी में भी उभरने लगती है। चकमक के लिए आने वाली रचनाओं में भी कभी-कभी नकल की हुई कविताएँ या कहानियाँ आ जाती हैं। इस संकलन में शामिल रचनाएँ मौलिक हों, यह प्रयास हमने किया है।

**एकलव्य**

जून, 1989

# खाकरी का पत्ता

सागरमल विश्वकर्मा

एक आदमी बाज़ार जा रहा था। जाते समय रास्ते में एक खाकरी का पौधा मिला, उसने उसमें से एक पत्ता तोड़ लिया और दो पत्तो को छोड़ दिया। उसने उस पत्ता को एक जगह स्थिर रखकर अपने घर चला गया। जब वह दूसरे दिन आया तो उसने देखा कि वह पत्ता सूख गया है तो वह दौड़ता हुआ उसी पौधे के पास पहुँचा। जो वे दो पत्ते थे वे नीचे झुकने लगे तो वह उसी पत्ता के पास जाकर रोने लगा और कहने लगा कि मैंने इस पत्ते को मार दिया।

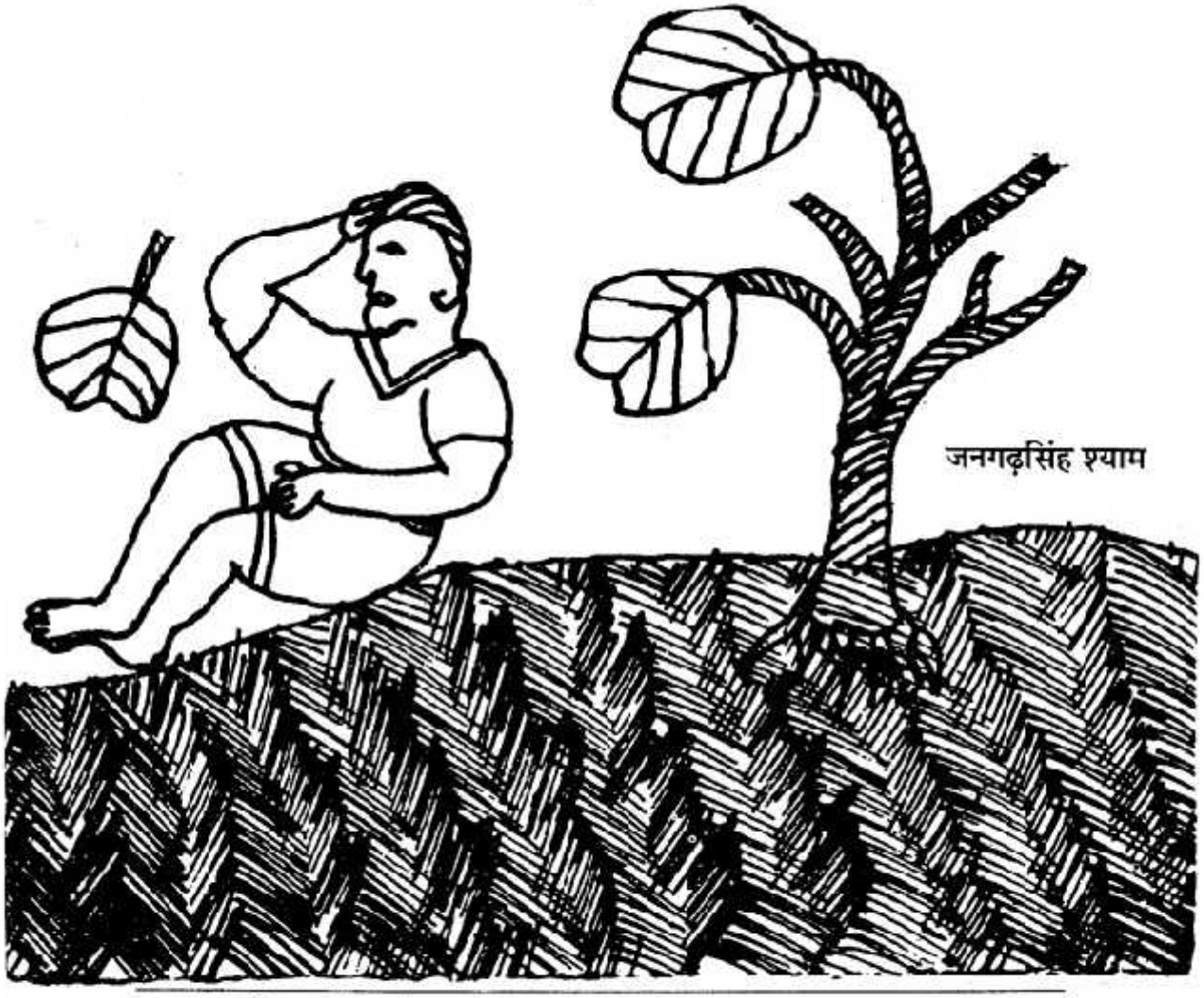


सागरमल विश्वकर्मा, चांसिया, देवास, म.प्र.।
जनगढ़सिंह श्याम, मण्डला, म.प्र.। कहानी तथा चित्र चकमक जनवरी, 87 में प्रकाशित।

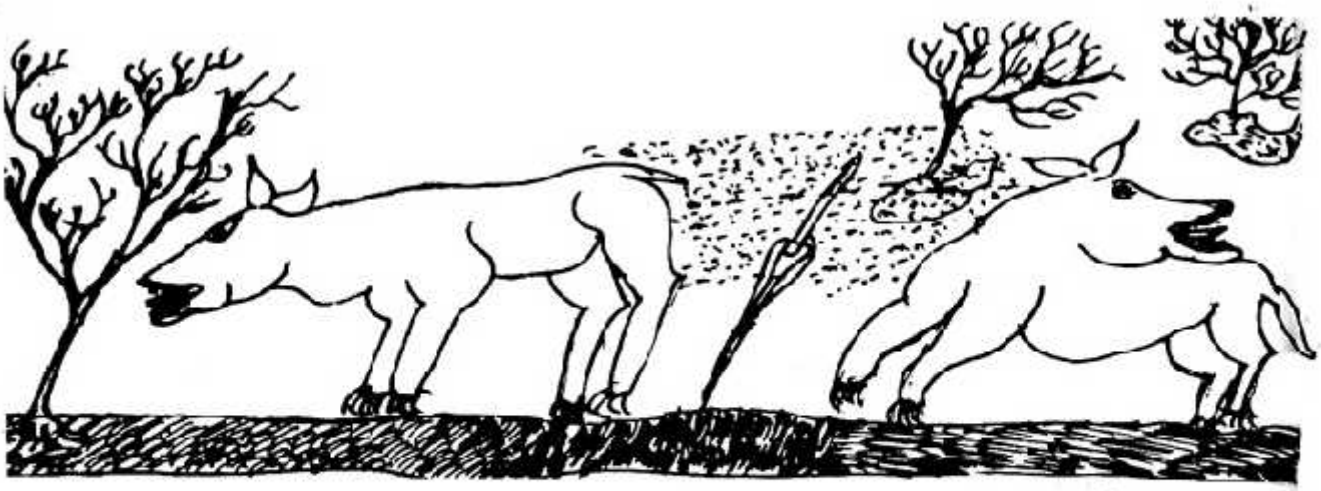

जनगढ़सिंह श्याम

# लोमड़ी और जमीन

फूलसिंह ठाकुर

एक समय की बात है। उस समय जानवरों का अकाल पड़ा था। तब एक लोमड़ी एक जंगल में रहता था। उसको आठ दिन तक खाने को ना मिला। तब लोमड़ी ढूँढते-ढूँढते एक जंगल में घुस गया। तब उसे जंगल में एक सेंटीमीटर गाय की हड्डी मिली तो लोमड़ी बहुत खुश हुआ। और हड्डी के इस पार से उस पार कूद-कूद कह रहा है, कितने पैसे का ये हड्डी है?

बोल-बोलकर वह थक गया पर वहाँ कोई नहीं रहे तो किससे बताता। तब जमीन सुन-सुनकर थक गई और बोली, एक पैसा देके खाओ। फिर उतना ही सुनकर लोमड़ी जल्दी-जल्दी खाने लगा। और खतम किया और भागने लगा। कम से कम एक किलोमीटर भागकर सुस्ताने लगा। तब जमीन तो वहीं हैं। उसने नहीं सोचा और बैठ गया। फिर जमीन बोली, ऐ लोमड़ी मुझे एक पैसा देना। लोमड़ी ने सोचा यहाँ पर भी जमीन आ गई। वह फिर भागा। एक-दो किलोमीटर जाकर बोला यहाँ पर भी जमीन पैसा माँगने आएगी। वहाँ पर आराम करने लगा। तब फिर जमीन बोली, देना मुझे एक पैसा। लोमड़ी यह सुनकर फिर भागा। एक किलोमीटर जाने

---

फूलसिंह ठाकुर, नवमीं, छिंदगढ़, बस्तर, म.प्र.।

जनगढ़सिंह श्याम, मण्डला, म.प्र.। कहानी तथा चित्र चकमक जनवरी, 97 में प्रकाशित।

पर बोला कि यहाँ भी जमीन पैसा माँगने आएगी। तब जमीन फिर बोली, देना एक पैसा।

ऐसा करते-करते लोमड़ी भाग रहा था कि काँटा के झाड़ में घुस गया। तब एक काँटा उसके आँख में गड़ गया। और लोमड़ी रोने लगा। तब जमीन फिर बोली, देना मेरा पैसा।

उसकी आवाज़ सुनकर लोमड़ी गुस्सा होकर बताई, क्यों तुम एक आँख वाले को भोजन दी रही कि दो आँख वाले को दी रही। जमीन बोली, दो आँख वाले को। तब लोमड़ी बताई की मेरा तो एक आँख है। जमीन चुप हो गई। इसलिए लोमड़ी चालाक होती है।

जनगढ़सिंह श्याम

# नदिया में आया पूर

**हीरालाल अहिरवार**

**एक** बार हमारे गाँव की नदिया का पूर आया था जी। कि जब बारिश में करीब आठ दिन बरसा हुई थी। हुजूर आपको तो मालूम ही होगा कि भौत करी बरसा हुई थी तो हमारी नदिया आ गई तो का करें कि हमारे गाँव के मोड़ा-मोड़ी सब चले गए। जैसे के बरात आगे में जात हैं। तो मैय्या लाइन लगी के ओ भैया रे ये जा नदिया तो देखो कम से कम पचास-साठ आदमी मोड़ा-मोड़ी जुड़ गए।

तो भैयाजी का भव कि नदिया चड़त-चड़त सौसर हो गई क्योंकि बरसा अच्छी भई थी। असल में जोरदार तो हमरे गाँव के

---

हीरालाल अहिरवार, सातवीं, रानी पिपरिया, होशंगाबाद, म.प्र.।

जनगढ़सिंह श्याम, मण्डला, म.प्र.। कहानी एवं चित्र चकमक जनवरी, 87 में प्रकाशित।

दूध बेचने जाते थे। तो दो आदमी डिब्बा लेकर घुसने लगे और जाते-जाते गलक में पड़ गए और फिर भईं गप्प-गप्प करने लगे इतने में दो लोग और इकट्ठे हो गए तो वे जल्दी भगे। भगते-भगते कूद पड़े। वे चिल्लाकर बोले - हाय बचाओ, हाय बचाओ। दो लोग एक दूसरे से कहते - ओ भैया अपन नदिया में ने कूदहें बे। उनके दूध के डिब्बा गिर गए और वे बराजोरी बचें भैया। वा दिन से हमरी नदिया में कोई आदमी नहीं कूदे।

हजूर, तो ऐसी हमारी नदिया का पूर है, हमारे काका को एक सागौन का बड़ा मोटा डूंडा मिला। उन्होंने सात आदमियों से उसे घर लाए और फिर पतरी लकड़ी पकड़ी। जो अभी हम लोग जलाते हैं। और डूंडा के हमने दरवाजे बनवाए हैं तो वे दरवाजे हमारे मकान में लगे हैं। जो अगर नदिया में लकड़ी आ जाए तो हमारे गाँव वाले लोग पकड़ते हैं। एक बार मैं खुद गया था तो मेरी कसम मैने डंगरा-कलींदे पकड़े थे और बहुत सारे लोगों ने भी पकड़े।

आपने भी पूर देखा होगा जी। एक बार नदिया आई तो एक आदमी कूद पड़ा तो बह गया और बहते-बहते चिल्लाया - भैया रे मोहे पकड़ों मैंने कई मैं तोसे कै थी का कूद जा, तू तो लकड़ी पकड़ रहो थो। मैं कई मत कूदे। तू तो कूद पड़ो लकड़ी काजे, न तेरी लकड़ी पकड़ानी और हम न होते तो तू मर जातो। हमारी नदिया का पूर भौत ज़्यादा आता है जी।

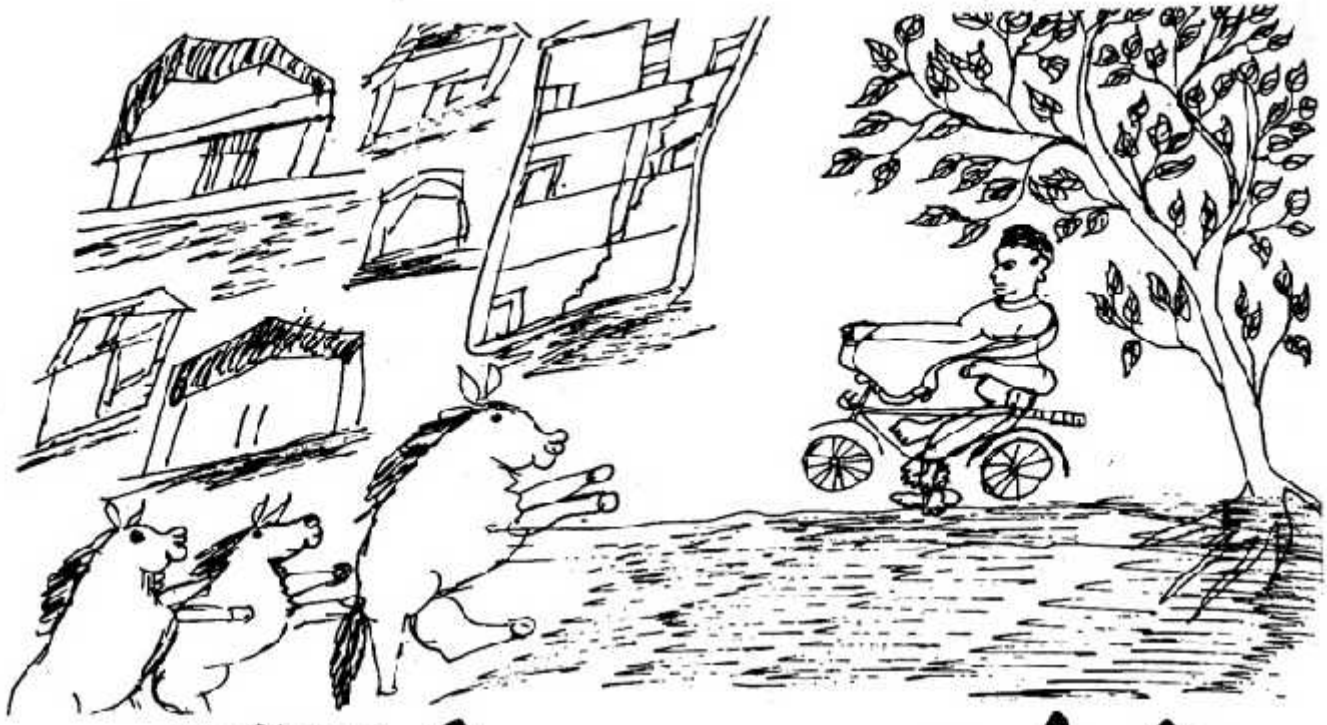

जनगढ़सिंह श्याम

# बबलूजी टकराए गधे से

राजेश भरावा

एक बार सुबह के आठ बजे मैं घर से सदर बाज़ार की ओर जा रहा था। स्टेशन रोड की तरफ से तीन गधे जा रहे थे। तभी उधर से कुत्ते उन पर भौंके और झपट पड़े। गधे ज़ोर-ज़ोर से भागने लगे। उधर से बबलू आनन्द आटोगैरिज के सामने से सन्न सायकल से आ रहा था। दौड़ते हुए गधों में से एक बबलू की सायकल से टकरा गया। बबलू सायकल के नीचे आ गया। गधा उसके ऊपर। इसी प्रकार दूसरा गधा उस गधे पर गिर पड़ा। तीन गधे उस सायकल पर गिर पड़े। और फिर कुत्ते भी उन पर गिर पड़े। वहाँ गधों और कुत्तों का ढेर हो गया। फिर कुत्ते उठकर भागे, फिर गधे उठकर सदर बाज़ार की ओर बहुत दूर भाग गए। बबलू सायकल के नीचे ही पड़ा रहा।

उसके बाद बबलू को उठाकर हॉस्पीटल ले गए। वहाँ बबलू की जाँच चालू हुई। पर बबलू इस प्रकार की बात देखकर रोया नहीं। पर

---

राजेश भरावा, आठवीं, नामली, रतलाम, म.प्र.। चकमक जून, 88 में प्रकाशित।
जनगढ़सिंह श्याम, मण्डला, म.प्र.।

सब लोग इस प्रकार की बात देखकर ऐसे हँसे कि रोने लग गए। मेरी भी हँसी ऐसी चली कि पेट में दर्द होने लगा। फिर मैं भी हॉस्पीटल गया।

जब बबलू ठीक हो गया तो वह गधे से बहुत दुश्मनी रखने लगा। जब कभी गधा आता वह लकड़ी से मारकर भगा देता था। फिर दिवाली आई। बबलू फटाके लाया और उसने एक तरकीब सोची। उसने कुछ फटाके टी. वी. के पीछे छिपा दिए। कुछ फटाके लेकर वह दोस्तों को बुलाकर गाँव में गधा ढूँढने के लिए गया।

उनको एक कुत्ता और एक गधा मिला। उन्होंने कहा कि आज के दिन हम गधा यज्ञ एवं कुत्ता यज्ञ करेंगे। तो उन्होंने गधे और कुत्ते दोनों को खड़ा करके उनका यज्ञ किया। दोनों को सजाकर उनके पूंछड़ी पर बड़े फटाके बाँध दिए। तब गधा चीपों-चीपों करता हुआ गाँव में घूमा। फिर गधा ठाकुर के घर में घुस गया। जब फटाके फूटे तो ठाकुर की पगड़ी गधे के पैर में आ गई। ठाकुर इस अपमान को देख नहीं पाया और उसने बबलू को सज़ा दी।

उधर कुत्ते की पूँछ में फटाके बँधे थे। कुत्ता बबलू के घर में घुस गया। और टी.वी. के पीछे जाकर बैठ गया। उसे पता नहीं था कि यहाँ भी फटाके पड़े हुए हैं। जब टी.वी. के पीछे वाले फटाके फूटे तो टी.वी. की एक-एक चीज़ गाँव में उड़ गई। इस प्रकार बबलू को हानि हुई। बबलू ने कहा कि आज से गधा सिंह और कुत्ता सिंह दोनों ही मेरे मित्र हैं।

गोपाल सिंह अस्के

# गाय के लिए पाला

इकबालसिंह अरोरा

हमारे घर में एक भी गाय नहीं थी। तब मेरे भाई नरेन्द्र ने पिताजी से कहा कि पिताजी हमारे घर में गाय नहीं है। तो वे एक गाय लेकर आए। वह गाय बहुत भूखी थी। पिताजी ने कहा, बेटा नरेन्द्र और इकबाल तुम दोनों जंगल जाकर गाय के लिए पाला (पत्तियाँ) ले आओ।

हम दोनों भाई और एक लड़का, दुर्बन नाम का, जंगल गए। जंगल में मेरा भाई पेड़ पर चढ़कर एक डाली पर बैठ गया और उस डाली को नीचे झुका दिया और बोला, दुर्बन डाली पूरी ताकत से खींचों। तब दुर्बन ने डाली खींची और मेरा भाई नीचे गिर गया। तब मैं रोने लगा और दुर्बन हँसने लगा। मेरा भाई बेहोश हो गया। तब मैं

---

इकबालसिंह अरोरा, आठवीं पीपरी, देवास म.प्र.।

गोपालसिंह अरके, आठवीं पीपरी, देवास, म.प्र.। कहानी तथा चित्र चकमक अप्रैल, 87 में प्रकाशित

दौड़कर उसके लिए पानी लेने गया। मैंने एक खोदरी में से पानी पिला दिया। जब मेरे भाई को होश आया। तब वह कहने लगा घर जाकर पिताजी को मत कहना। तब हम घर गए और पाला गाय को डाल दिया।

शाम को दुर्बन ने मेरे पिताजी को सारी बात बता दी। तब पिताजी ने गुस्से में आकर हम दोनों भाईयों को एक नीम के पेड़ पर बाँध दिया। मेरे बड़े भाई के हाथ में रस्सी बाँधकर एक डाल के ऊपर से निकालकर मेरे हाथ में बाँध दी। रस्सी छोटी थी। जब मेरे पिताजी बाँधकर अलग हटे तब मेरे भाई का वज़न ज़्यादा और मेरा कम होने से मैं ज़मीन से उठकर सट्ट से ऊपर पहुँच गया। तब मेरे पिताजी ने भाई को ऊपर उठा लिया और थोड़ा ऊपर कर दिया तो मैं नीचे आ गया। फिर पिताजी ने हम दोनों भाईयों को पीटा तो हम ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे तो वहाँ पर सारा मोहल्ला इकट्ठा हो गया और हमें छोड़ दिया।

दूसरे दिन मैं दुर्बन को मारने गया। मैं पेड़ की आड़ में छुप गया और उधर दुर्बन निकला तो मैंने पूरी ताकत से दुर्बन के पाँव में लट्ठ जमा दिया। तब वह चिल्लाया और मैं भाग गया। ऐसी थी पाले की कहानी।

श्वेता जोशी

# कंट्रोल दुकान की शक्कर

हेमलता साहू

एक दिन मैं पढ़ रही थी। उस दिन 29 तारीख थी। मम्मी बोली जाओ और पता लगाओ कि कंट्रोल शक्कर की दुकान खुली है कि नहीं। मैंने कहा, मैं क्यों जाऊँ भैया नहीं जा सकते। तो वे बोलीं, बेटी वो तो कॉलेज गया है, मालूम नहीं कब लौटे। थोड़ी दूर ही तो है। चली जा। मैं कॉपी पुस्तक बन्द करके चप्पल पहनकर जाने लगी तो वे बोली, थैली और परमिट, पैसे भी ले जा नहीं तो बार-बार आएगी। सो मैं थैली में परमिट रखकर और पैसों को मुट्ठी में रखकर चल दी।

---

हेमलता साहू, आठवीं, कन्नौद, देवास, म. प्र.। चकमक फरवरी, 1986 में प्रकाशित।
श्वेता जोशी, सातवीं, पिपरिया, म.प्र.। चकनक जनवरी, 1987 में प्रकाशित।

पन्द्रह मिनिट बाद राशन की दुकान पर पहुँची। वहाँ देखा तो दिन में तारे नज़र आने लगे। क्योंकि वहाँ दुकान के आँगन में पैर रखने लायक जगह नहीं थी, सो किसी प्रकार अन्दर घुसने की जुगाड़ लगाने लगी। फिर दुकान में से एक लड़का निकला और सबको लाइन से लगाकर चला गया। थोड़ी देर लोग शान्त खड़े रहे। इतने में एक मेरे बराबर लड़की सैंडिल फटकारते हुए आई और मेरे आगे लगने लगी। मैंने उसे मना किया तो नहीं मानी, लड़ने लगी। मैंने सोचा लग जाने दो। वह सामने लग गई और मुझे मुड़कर घूरकर देखने लगी। मैं नहीं बोली। फिर लोग बाग लाइन तोड़ने लगे। मैं भी थोड़े आगे पहुँच गई। मेरा नम्बर भी आ गया। उस दुकानदार, जिसकी तोंद बढ़ी थी और जो आसन लगाए बैठा था, ने परमिट और पैसे माँगे मैंने दे दिए। वह बोला छुट्टे पैसे दो। मैं बोली नहीं हैं। तो बोला, दो माचिस ले लो। मैंने कहा, पैसे दो। वह बोला छुट्टे नहीं हैं और माचिस भी नहीं लेती। मैंने डरकर माचिस ले ली। फिर उसने शक्कर दे दी।

कुढ़ती हुई बाहर निकली तो सोचा, अब निकलूँगी कैसे, भीड़ तो बहुत है। पर जैसे-तैसे हिम्मत की और घुस गई। बाहर निकली तो पैर की एक चप्पल गोल थी। भीड़ में ही छूट गई। मैंने सोचा, भाड़ में जाए चप्पल। मैं तो घर चली। घर पहुँची तो मम्मी ने खूब डाँटा, चप्पल लेके आओ। मैं फिर आई और दो घण्टे बठकर जब भीड़ छटी तब मैंने चप्पल उठाई। मैं दुकान वाले को मन ही मन गालियाँ देते हुए घर आ गई। पहली बार मेरी ये हालत हुई। मैंने कान पकड़ लिए कि अब नहीं जाऊँगी।

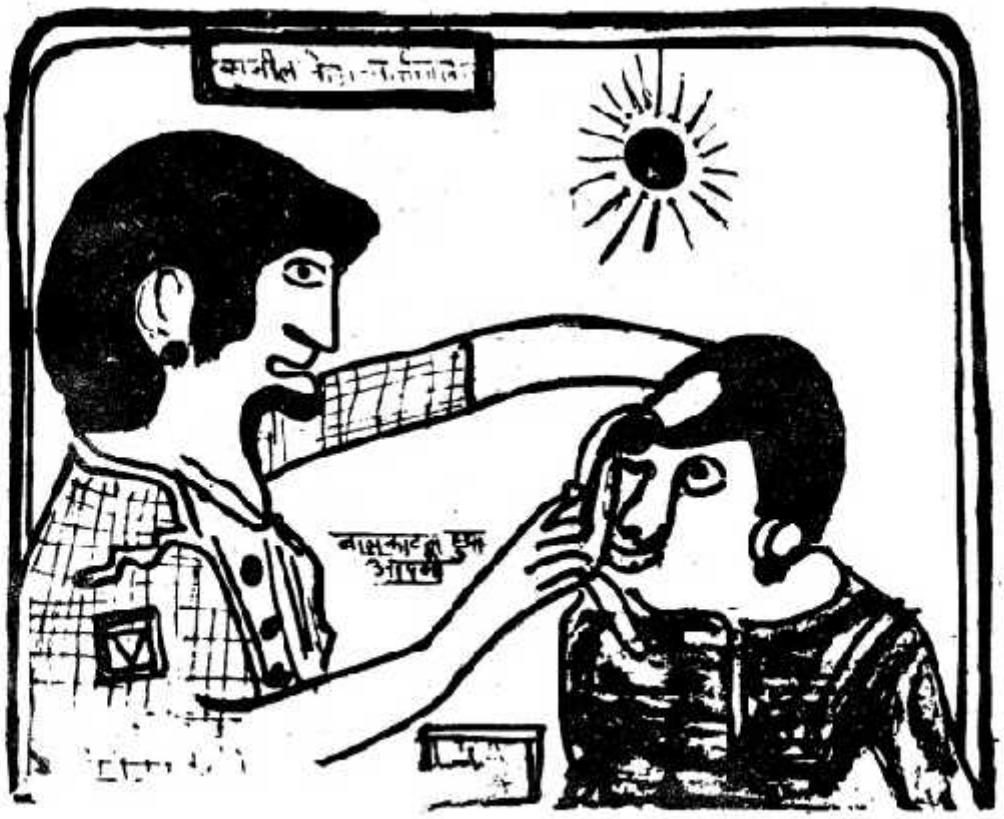

गगन जैन

# भाई के बाल कटवाए

गोरधन सारवान

मैं एक बार अपने छोटे भाई मुकेश के साथ बाल कटवाने सुरेश नाई की दुकान पर गया।

नाई ने उससे पूछा, "तुम बाल कैसे कटवाओगे?"

हमारे भाई ने जवाब दिया, "मैं बाल फैशनदार कटवाऊँगा।"

मैंने अपने छोटे भाई से बोला कि, "जैसे बाल हैं वैसे ही छोटे करवा लो, पिताजी ने बोला है।" तो वह मेरी तरफ घूर-घूर के देखने लगा और फिर रोने लगा। मैंने उससे बोला कि, "आप रोओ मत जैसे कटवाना चाहो वैसे ही कटवाओ।" वह चुप हो गया, हँस दिया और बाल कटवाने लगा।

नाई ने उसके बाल बहुत अच्छी तरह से काटे। वह एक-एक बाल को अपनी कैंची से काटता रहा। फिर उसने ब्लेड से दोनों कानों के पास (कलम) के बाल साफ किए। फिर पीछे बाँची (गरदन) के बाल साफ किए। फिर उसने मुकेश के मुँह व बोंची पर पावडर लगाया। नाई ने मुकेश के बाल में तेल लगाकर मालिश की, बाल जमाए। और अन्त में मैंने उसके पैसे चुकाए। फिर हमने उससे विदा ली।

जब हम घर पहुँचें तो पिताजी ने उसे डाँटा, साथ मुझे भी डाँटा। इसका तात्पर्य यह है कि आजकल के छोटे-छोटे बच्चे भी फिल्म देखकर नई डिजाइन की कटिंग व नई डिजाइन के बाल जमाना सीखने लगे हैं।

---

गोरधन सारवान, आठवीं, कन्नौद, देवास, म. प्र.।

गगन जैन, आठवीं, धार, म.प्र.। कहानी तथा चित्र चकमक फरवरी, 1986 में प्रकाशित।

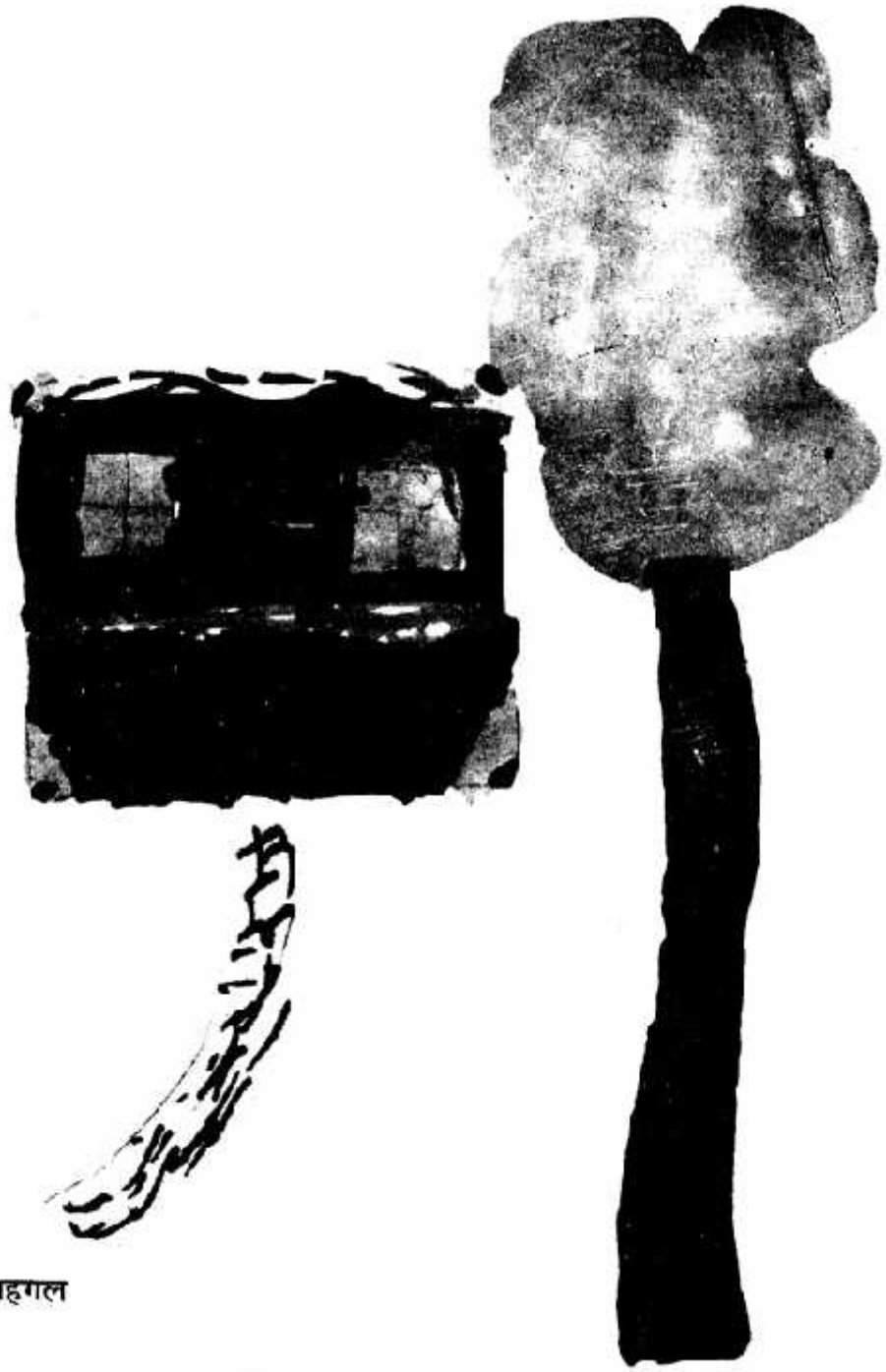

ऋतु सहगल

# बसकारे में घर गिरा

शोभा व्यास

रिमझिम-रिमझिम पानी की वर्षा हो रही है। कोई वसुन्धरा के बागानों को सींच रहा है। काले-काले बादल आसमान में कभी-कभी लड़ पड़ते हैं तो धरती का इन्सान काँप जाता है।

छोटा-सा आँगन। आँगन के कुछ आगे देहलान और एक

---

शोभा व्यास, आठवीं, बनखेड़ी, पिपरिया, म. प्र.। चकमक जुलाई, 1985 में प्रकाशित।
ऋतु सहगल, सात वर्ष, दिल्ली

छोटा-सा कमरा है। यही हमारा इस बरसात में सोने, बैठने और खाने के लगभग सभी काम में आता है।

बादलों ने सम्पूर्ण आसमान पर आधिपत्य जमा लिया। घने अंधेरे में कभी-कभी बिजली चमक पड़ती है। हम चिमनी जलाते और उसे हवा पल-पल इस कदर बुझा देती कि जैसे हमसे खिलवाड़ कर रही हो। आखिर हम परेशान होकर बैठ गए अपने दादा जी के पास। उन्होंने तम्बाखू का बलगम उगला और पिताजी से बोले, "दीवार अधिक सीड़ गई है। कहीं गिर न जाए।"

तभी बऊ अपनी त्यौरी चढ़ाकर बोली "कल की गिरने की आज ही गिर जाए। कभी तुमने काम किया है। कम से कम पक्का मकान बनवा देते।"

दादा अपनी सफेद मूँछों को ऊपर-नीचे करते हुए बोले, "मैंने क्या नहीं किया? रही मकान की बात, तू कहे तो कल ही पक्का बनवा दूँ।"

बऊ ने आँखों की पुतलियों को नचाते हुए कहा,"ऐसे कल-कल की कहकर तो ज़िन्दगी गुज़ार दी।"

इधर दादा-बऊ ज़बान लड़ा रहे थे। तो उधर बादल आकाश को अखाड़ा समझकर नागपंचमी के पहलवान से लड़ रहे थे। वर्षा और तेज़ हो गई। छप्पर बैठ चुका था। अचानक पानी इतनी तेजी से बरसा की हमारी दीवार दम तोड़ गई। धड़ाम की आवाज़ से दीवार गिर गई। दादा-बऊ का झगड़ा मिनटों में खत्म हो गया। जैसे हमारे घर में मुसीबत का पहाड़ टूट गया। माँ उस समय शाम का खाना पका रही थीं। वे जल्दी से उठीं और नुकसान से बचाने के लिए सामान उठाने लग गई।

जब पानी रुका तो सभी सबेरे से दीवार का गलबा ढोने लगे। हम बीच-बीच में थोड़ी देर साँस ले लिया करते थे। लेकिन जल्दी पड़ रही थी। कि कहीं फिर से पानी न आ जाए। लगभग दोपहर एक बजे तक दीवार का मलबा इकट्ठा हो गया। वर्षा के पानी के सहारे मिट्टी मचाई और दूसरे दिन से सबने मिलकर दीवार उठाना शुरू किया। दीवार लदक-लदक जाती थी। अतः धीरे-धीरे उसे ऊपर बढ़ाते थे। चार दिन में दीवार तैयार हो गई। तब कहीं हम लोगों ने चैन की साँस ली।

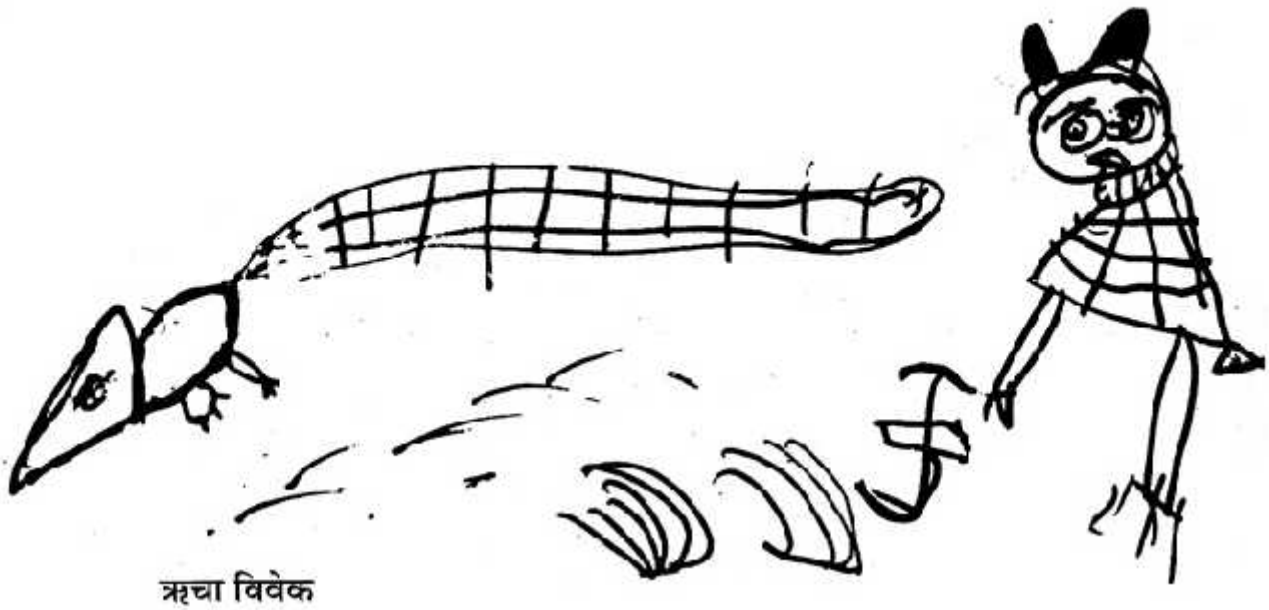

ऋचा विवेक

# बिल्ली और चूहा

प्रफुल्ल परसाई

बिल्ली और चूहा नाम के दो मित्र रहते थे। एक दिन बिल्ली अपने गाँव जा रही थी। चूहा ने पूछा, तुम कहाँ जा रही हो? बिल्ली ने कहा, मैं अपने गाँव जा रही हूँ। चूहा ने कहा, मुझे भी साथ ले चलो। बिल्ली ने कहा, मैं नहीं ले जा सकती दोस्त। दोस्त, तुम मेरे घर की रखवाली करना।

बिल्ली चली गई। चूहा दिन-भर घर की रखवाली करता रहा। एक दिन चूहा ने अपनी शादी कर ली। उसके दो बच्चे हुए। चूहा ने बिल्ली के कपड़े चुरा लिए और अपने बच्चों को पहना दिया। बिल्ली गस्त चली आ रही थी। उसने दूर से देखा की उसके कपड़े उसने अपने बच्चों को पहना दिए तो उसे बहुत गुस्सा आया। बिल्ली चूहे को मारने दौड़ी तो चूहा अपनी जान बचाकर भागा।

---

प्रफुल्ल परसाई, ऋचा विवेक, चार वर्ष, भोपाल, म. प्र.। कहानी तथा चित्र चकमक जनवरी, 1987 में प्रकाशित।